कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (2) खण्ड - (3)

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- ऑखों से भल ..... देखते हो परन्तु याद सुप्रीम टीचर शिवबाबा को करना है ?

A ब्रह्मा को

B बापदादा को

Cअव्यक्त ब्रह्मा को

D A और C

प्रश्न सं 2- जो बाप के प्रिय, ब्राह्मण

परिवार के प्रिय और विश्व सेवा केप्रिय हैं वही क्या हैं?

A एकनामी

B एवरप्योर

C एवररेडी

D A और C

प्रश्न 3-- तुम बच्चे कलियुगी गोवर्धन पर्वत को

उठाने के लिए कौन-सी अंगुली देते हो ?

A- श्रीमत पर चलने की

B- सहयोग की

C- पवित्रता की

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 4 -- बच्चों की डबल पूजा किस रूप में होती है ?

A- सालिग्राम के रूप में

B- देव आत्माओं के रूप में

C- भगवान भगवती

D- A और B

E- A ,B और C

प्रश्न 5 - चेहरे वा चलन से प्योरिटी की झलक तब दिखाई देगी जब सदा संकल्प में भी क्या हो ?

A - रायल्टी

B - प्योरिटी

C- एकवर्ता

D -A और B

प्रश्न सं 6 -परमात्मा के सम्बन्ध में इनमें सबसे उपयुक्त कथन का चयन करें?

A-अन्तर्यामी

B-सर्वज्ञ

C-विश्व का मालिक

D-B और C

प्रश्न सं 7- अब भारत-वासियों पर राहू की दशा बदलकर किसकी दशा बैठती है?

A- सूर्यवंशी व चन्द्रवंशी की दशा

B- शुक्र की दशा

C- मंगल की दशा

D- उपरोक्त में से कोई नहीं।

प्रश्न सं 8-मात-पिता की आशीर्वाद आगे बढ़ाती है इसलिए आज्ञाकारी बन क्या लेनी है?

A- दुआए

B- आशीर्वाद

C- वरदान

D- A और B

खण्ड -3 प्रश्नोत्तरी

के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं-1 A-ब्रह्मा को

यह बहुत विरोधाभासी प्रश्न है।ब्रह्मावत्स संदेह भी करते हैं कि शिवबाबा को याद करूं या दोनों को। यहा इस प्रश्न का निवारण श्रीमतानुसार किया गया है - बाबा ने साकार की अनेक मुरलियों में ब्रह्मा बाप को देखते हुए भी उन्हें याद न कर एक बाप को याद करने की बात कही है। यह भी कहा है कि ब्रह्मा को याद करने से तुम्हारे विकर्म नहीं कटेंगे।उस समय ब्रह्मा बाप भी पुरूषार्थी थे, सम्पूर्णता और कर्मातीत न होने से बापसमान स्थिति को प्राप्त नहीं हुए थे। ब्रह्मा बाबा उस समय ब्रह्मावत्सों को अपना चित्र भी न रखने की बात करते थे- दादी जानकी वचन-। पूर्व की क्विज में कम्बाइंड शब्द आया है और अब अव्यक्त ब्रह्म जब शिवबाबा का कम्बाइंड बनकर ब्रह्मावत्सों की सेवा कर रहे। महावाक्य अनुसार 1- भले साकार रूप में नहीं देखा लेकिन अब अव्यक्त रूप में पालना ... ब्रह्मा बाप की विशेष है।

2-अब भी दोनों ही मिलके बापदादा दोनों ही बच्चो की सेवा कर रहे हैं। तो ब्रह्मा बाप की पालना का विशेष पार्ट है, फालो बापदादा दोनों को करो क्योंकि सभी दिल से याद करते हैं ब्रह्मा बाप की विशेष शिक्षा है – स्मृति स्वरूप बापदादा के बनो। अकेले बाप भी नहीं, अकेले ब्रह्मा बाप भी नहीं। दोनों को याद करो। अन्य विकल्प बापदादा और अव्यक्त ब्रह्मा भी युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता है। यह प्रश्न साकार मुरली आधारित होने के कारण विकल्प A सही।

उत्तर 2- D एवरप्योर

ब्राह्मण जीवन का फाउंडेशन/ आधार है। पवित्रता प्रथम स्तम्भ है। बिना पवित्रता के ब्राह्मण जीवन का आधार नही। ब्रह्माकुमारीज की प्रथम शर्त है। बाप , ब्राह्मण,विश्व सेवा के प्रिय यह प्रश्न अव्यक्त मुरली सम्बन्धित है। पवित्रता के कारण इन सब के प्रिय नहीं होगें। महावाक्य अनुसार ----

१-एवररेडी। बाप पसन्द, ब्राह्मण परिवार पसन्द और विश्व की सेवा के पसन्द। यह तीनों ...

२- जो एकनामी रहते और एकॉनामी से चलते हैं, वही प्रभू प्रिय हैं ... वही बाप वा परिवार के प्यार के ...

उत्तर 3- C पवित्रता

महावाक्यों से तुम बच्चे कलियुगी गोवर्धन पर्वत को उठाने के लिए कौन-सी अंगुली देते हो?

उत्तर:-पवित्रता की। पवित्रता की प्रतिज्ञा करना ही जैसे अंगुली देना है। पवित्रता नहीं है तो भारत का हाल देखो क्या हो चुका है। अन्य कई मुरलियों में यथा भी तुम रूप बसन्त हो,* *तुम्हें ... गोवर्धन पर्वत को उठाने के लिए पवित्रता ...।श्रीमत के अन्तर्गत सबसे पहले पवित्रता ही आती है।यहां सबसे उपयुक्त विकल्प का चयन करना था जो कि महावाक्यों मे पवित्रता ही वर्णित है, अंगुली देना मुहावरा है जिसका अर्थ सहयोगी और सहारा देने से है।-

---

उत्तर-4 D - अव्यक्त महावाक्यानुसार कभी भी सालिग्राम को देखते हो तो क्या अनुभव

करते हो? ये हम ही हैं ऐसे लगता है? तो बाप ने बच्चों को समान तो क्या लेकिन अपने से भी श्रेष्ठ पूज्य बनाया है। बच्चों की पूजा डबल रूप में होती है। बाप की पूज़ा एक ही शिवलिंग के रूप में होती है। आप बच्चों की सालिग्राम के रूप में भी होती है और देव आत्माओं के रूप में भी पूजा के अधिकारी होती है। बाप से भी

ज्यादा डबल रूप की आत्मायें आप हो। यह सही है कि मुरलियों में बाबा ने हमें भगवान भगवती का टाइटिल/पद दिया है सम्मान में।पर भक्त और अन्य धर्म वाले शिवबाबा/ईश्वर को इस रूप मे मानते व पूजते है। ।

उत्तर -5- D रायल्टी और प्योरिटी ।

रॉयल आत्मा का चेहरा और चलन ... तो प्योरिटी की रॉयल्टी सदा प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे।पूज्य रूप में भी आप देव आत्माओं की कितनी रॉयल्टी से पूजा होती रहती है क्योंकि आप आत्माओं की प्योरिटी की ही रॉयल्टी है। ऐसे सम्पूर्ण पवित्र और कोई भी आत्मा सारे कल्प में न ही बनी है, न बनेगी। यह प्योरिटी की ही विशेषता है। इसलिए सिर्फ देव आत्माओं के आगे ही यह महिमा गाते हैं कि आप सम्पूर्ण निर्विकारी हो,एकवर्ता भी ब्राह्मण जीवन की विशेषता व गुण है।पर महावाक्यों और उपयुक्त उत्तर चयन

के आधार पर श्रीमत में भी पहले नम्बर पर पवित्र मार्ग पर चलना है D सही किया जाता है।

उत्तर 6- B सर्वज्ञ

बाबा कहते हैं मैं तुम बच्चों को स्वर्ग का मालिक बनाता हूं। देवता बनकर तुम विश्व के मालिक बनते हो । मैं नये विश्व का रचयिता हूँ।दूसरे पिता परमात्मा शिव बाबा सर्व शक्तिवान,सर्वज्ञ है वह गीता ज्ञान दाता है गीता का भगवान हैं।मैं सर्वज्ञ,अजन्मा, अभोक्ता अकर्ता, अजर, अमर, अविनाशी हूं ।

बाबा ने कहा कि मैं अंतर्यामी (मन की बात जाननेवाला) नहीं हूँ। बाबा ने स्पष्ट किया, जैसे साकारी दुनिया के अंदर भक्ति मार्ग की आत्माएं समझती हैं कि अंतर्यामी माना जो हमने सोचा अभी भगवान को पता चल गया और हम जो कर रहे हैं, पर मुरली महावाक्यानुसार मनुष्य फिर समझते हैं बाबा अन्तर्यामी है, सबके मन की बात जानकर क्या करूंगा,मैं अन्तर्यामी नहीं हूँ।इस तरह सर्वज्ञ तो है पर अन्तर्यामी नहीं।

उत्तर-7- D- उपरोक्त में से कोई नहीं अर्थात् बृहस्पति की दशा

इनमें से कोई नहीं अर्थात् बृहस्पति की दशा संगमयुगी ब्राह्मण बच्चो की है। बाकी भारत सहित सारी दुनिया पर राहू की दशा है। इस रावण राज्य में जीवन नर्क के समान बन गया है। बुध और मंगल की दशा होने पर ज्योतिष अनुसार जातक को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों परिणाम होते हैं। ज्योतिष में, नवग्रह नौ दशाओं पर शासन करते हैं। इसलिए सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी कोई दशा नहीं। बृहस्पति की दशा-भक्ति में, व्यक्ति आदरसूचक धार्मिक अध्ययनों और शिक्षा में संबद्ध रहकर ईश्वर की कृपा से अपनी सभी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करना चाहता है और सुकर्मों में संलग्न रहता है। मुरलियों में बृहस्पति की दशा की चर्चा हुई है। *_बाबा ने कहा भी है की बच्चे तुम अभी संगम पर हो तुम्हारे उपर बृहस्पति की दशा बैठी है। यथा - अभी तुम्हारी ज्योति जगी हुई है, ज्योति जगना अर्थात् बृहस्पति की दशा बैठना, बृहस्पति की दशा बैठने से तुम विश्व के मालिक बन जाते ...._*

उत्तर 8- D आशीर्वाद और दुआ।

आशीर्वाद का हिंदी पर्यायवाची शब्द – शुभकामना, आशीष, शुभ वचन, आर्शीवचन, दुआ। अंग्रेजी शब्द BLESSINGS

आशीर्वाद और दुआ के लिए ही प्रयुक्त होता है।इस शब्द को बाबा अनेक महावक्यों में उच्चारित करते रहते हैं।यहां प्रश्न में माता-पिता का आशीर्वाद लेकर हमें आगे बढ़ाता है तो हमें आज्ञाकारी बनकर ब्लेसिंग/आशीर्वाद/दुआ लेनी है। प्रश्न की शैली के अनुसार यह उत्तर सही है। वरदान बाबा दाता बनकर हमें सहज ही देता हैं,उसके लिए आज्ञाकारी बनने की शर्त नही।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (2) खण्ड -(4)

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न 1-देवी- देवता और दिव्य गुणों वाले मनुष्य होते हैं ?

A- सतयुग

B- त्रेतायुग

C- सुखधाम

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 2- यदि श्रीमत का हाथ सदा साथ है, तो.....

A- माला का दाना अवश्य बनेगे।

B- सारा ही युग हाथ में हाथ देकर चलते रहेंगें

C- सदा निश्चिंत रह नाचते-कूदते .चलते रहेंगे।

D- B और C

E- A, B और C

प्रश्न सं 3- सोलह कलाओं से सम्पन्न कहा जाता है-

A- देवी-देवताओं को

B- श्रीकृष्ण को

C- ब्रह्मा बाबा

D- A और B

E- A,B और C

प्रश्न सं 4- जो यज्ञ स्नेही हैं वह मन्सा-वाचा-कर्मणा, तन मन और धन तीनों सेवा में क्या बनते हैं?

A- सदा सहयोगी

B- सदा योगी

C- सदा सेवाधारी

D-इनमें से कोई नहीं

प्रश्न सं 5- कर्म,समय,श्वांस,बोल सब में व्यर्थ की अविद्या अर्थात् ?

A- इनोसेंट

B- सेन्ट

C- सिद्धि स्वरुप

D-उपरोक्त सभी

प्रश्न सं 6- अनेकों साल ज्ञान मार्ग में चलने वाली एक माता को शिकायत रहती हैं, घर वाले बदलते नहीं। तो श्रीमत् अनुसार

माताजी को क्या करना चाहिए।

A- बिना स्व-परिवर्तन के कोई भी आत्मा प्रति कितनी भी मेहनत करो, परिवर्तन नहीं हो सकता इसलिए स्व।-परिवर्तन करना होगा।

B-लोग जीवन में परिवर्तन और समझाने दोनों से बदल जाते हैं। तो करके दिखाओ औरम समझाकर दिखाना चाहिए ।

C-घर वालों को रोज मुरली सुनानी चाहिए।

D- A, B और C

E- A और B

प्रश्न सं 7- किसका सामना करना समाप्त करो तो सेवा की ऑफर सामने आयेगी?

A विघ्नों को

B देह-अभिमान

C व्यर्थ

D B और C

E A,B और C

प्रश्न सं 8 -सबसे बड़ा खज़ाना कौन सा है, जिससे ही ज्ञान और योग की परख होती है ?

A स्नेह का खज़ाना

B खुशी का खज़ाना

C ज्ञान का खज़ाना

D शक्ति का खजाना

खण्ड -4 प्रश्नोत्तरी के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं -1 - A, देवी देवता।

यहां इस प्रश्न में दो शर्ते देवी देवता और दिव्य गुण में सबसे उपयुक्त का चयन करना था। दिव्य गुण सतयुग और त्रेतायुग में होते है ,दोनो युग को सुखधाम भी कहते हैं।

7 डे कोर्स (मुरलियों पर आधारित) में सतयुग में देवी देवता और त्रेतायुग में क्षत्रिय पढ़ाया जाता है।पर ज्यादातर मुरलियों में

विरोधाभासी महावाक्य बाबा ने अलग-अलग सन्दर्भ में देवी देवता और क्षत्रिय के सम्बन्ध में उच्चारित किये हैं,जैसे-

पक्ष मे 1--सतयुग में देवता, पीछे त्रेता में क्षत्रिय फिर वैश्य फिर शूद्र फिर ब्राम्हण।यही

2-"हम सो" "सो हम" का वास्तविक अर्थ है। यानी हम ही "सतयुग " में "देवी देवता " थे तो "त्रेतायुग " में "क्षत्रिय" कहलाए।

विपक्ष में- -

1-अविनाशी खण्ड में सतयुग और त्रेतायुग में चैतन्य देवी-देवता राज्य करते हैं,

2-सूर्यवंशी--चन्द्रवंशी देवता बनने वाले हैं वो ही आकर ज्ञान लेंगे, नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार।

3- विरोधाभासी पक्ष -. देवी- देवता और दिव्य गुणों वाले मनुष्य होते हैं सतयुग में या सुखधाम अर्थात स्वर्ग में। त्रेतायुग में क्षत्रिय होते तो उसके लिए हम पुरुषार्थ नहीं करते क्योंकि बाबा ने लक्ष्य लक्ष्मी नारायण का बनने का दिया है।

बाबा ने अनेक महावक्यों में पक्ष से सन्दर्भित त्रेतायुग में क्षत्रिय होते हैं यह महावाक्यों में कहे है।यहां स्पष्ट होता है कि बाबा का पढाने एम आब्जेक्ट या उद्देश्य देवी देवता ही है । वैसे भी 2017 में दोनों रूपों में पार्ट बन्द हो गया।बाबा कहता है कि त्रेतायुग में क्षत्रिय होते तो उसके लिए हम पुरुषार्थ नहीं करते क्योंकि बाबा ने ऐम आब्जेक्ट लक्ष्मी नारायण का बनने का दिया है। बाबा ने मुरलियों में यद्यपि हमें सतयुग और त्रेतायुग अर्थात् सुखधाम में कहीं कहीं देवी देवता पद कह कर अलंकृत करता है। 2 करोड़ देवी-देवता त्रेतायुग युग में आते है। शेष अन्त में संघर्ष करने के कारण क्षत्रिय कहलाते है।बाबा ने अकेले त्रेतायुग को कहीं पर देवी देवता युग नहीं कहा। दिव्य गुण व सुख वहां भी देवी देवता जैसा है। शास्त्रों में श्रीराम को क्षत्रिय ही कहा गया है। अतः 5 वर्ण देवता, क्षत्रिय,वैश्य,शूद्र और ब्राह्मण (अनेक मुरली महावाक्यों में उच्चारित) है ।निष्कर्ष रूप में त्रेतायुग दिव्य गुणों के कारण देवी देवता जैसा होते हुए भी क्षत्रिय वर्ण/ सम्प्रदाय ही है। सतयुग उत्तर सही सिद्ध होता है

उत्तर -2 -B- सारा ही युग हाथ में हाथ देकर चलते रहेंगें।

यदि हम संगमयुग में सदा श्रीमत का सदा साथ देंगे, तभी सारा ही दोनों युग हाथ में हाथ देकर अर्थात् सहयोगी बनकर चलते रहेंगे।

अव्यक्त-बापदादा_"श्रीमत रूपी हाथ सदा हाथ में है तो सारा युग हाथ में हाथ देकर चलते ...।निश्चिंत रह कूदते नाचते रहने वाले परमत वाले भी होते हैं।माला का दाना बनने के लिए श्रीमत पर तो चलना ही है। परन्तु विजय माला में आना है तो विशेष होली (पवित्र)

बनने का पुरुषार्थ करो। जब पक्के संन्यासी अर्थातू निर्विकारी बनेंगे तब विजय माला का दाना बनेंगे। कोई भी कर्मबन्धन का हिसाब-किताब है, तो वारिस नहीं बन सकते, प्रजा में चले।अगर दाने का दाने से सम्पर्क नहीं हो तो माला नहीं बनेंगी इसलिए सन्तुष्टमणी बन सदा सन्तुष्ट रहो और सर्व को सन्तुष्ट करो।

उत्तर -3 - B श्रीकृष्ण।

सतयुग में सर्वगुण सम्पन्न, मर्यादा पुरुषोत्तम, 16 कला संपूर्ण श्रीकृष्ण थे।. सतयुगी राजा का टाइटल 16 कला संपूर्ण सर्वगुण संपन्न संपूर्ण था।परन्तु सतयुग में परमधाम से आने वाली देव

आत्मायें सभी 84 नहीं लेती 84-76 जन्म लेती हैं।और कलायें भी 16 से कमतर होते हुए अन्त तक 14 रह जाती हैं, देवी, देवता उत्तर सही नहीं।ब्रह्मा बाबा तो पुरुषार्थी थे। श्रीकृष्ण ही सतयुग की प्रथम दिव्यात्मा ही सही उत्तर है।

---

*उत्तर 4- A- सदा सहयोगी।

बाबा के पास सभी बच्चों के तीनों प्रकार के खाते जमा हैं। जो यज्ञ स्नेही हैं वह मन्सा-वाचा-कर्मणा, तन मन और धन तीनों सेवा में सदा सहयोगी बनते हैं। हर खाते की 100 मार्क्स हैं। अगर किसी की वाचा सेवा की ड्यूटी है तो उसमें मनसा और कर्मणा की पर्सेंटेज कम न हो। वाचा सेवा सहज है लेकिन मनसा पर अटेंशन देने की बात है और कर्मणा केवल स्थूल सेवा की बात नहीं लेकिन संगठन में सम्बंध सम्पर्क में आना ये भी कर्म के खाते में जमा होता है। मनसा वाले विशेषतः योगी होते हैं,तन और धन से सेवा करने वाले विशेषकर सेवाधारी होते अतः विकल्प सदा सहयोगी सही है। मुरली वरदान इस सन्दर्भ में *जो यज्ञ स्नेही हैं वह मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों सेवाओं के खाते जमा करने वाले यज्ञ स्नेही भव*

---

*उत्तर 5-A इनोसेंट

- इनोसेंट अपने देवताई संस्कारों को इमर्ज कर दिव्यता का अनुभव करने वाले व्यर्थ से इनोसेंट अर्थात् निर्दोष, अविद्या स्वरूप भव। जब आप बच्चे अपने सतयुगी राज्य में थे तो व्यर्थ वा माया से इनोसेंट थे इसलिए देवताओं को सेंट वा महान आत्मा कहते हैं। तो अपने वही संस्कार इमर्ज कर, व्यर्थ के अविद्या स्वरूप बनो। समय, श्वास, बोल, कर्म, सबमें व्यर्थ की अविद्या अर्थात् इनोसेंट। जब व्यर्थ की अविद्या होगी तब दिव्यता स्वत: और सहज अनुभव होगी इसलिए यह नहीं सोचो कि पुरूषार्थ तो कर रहे हैं – लेकिन पुरूष बन इस रथ द्वारा कार्य कराओ। एक बार की गलती दुबारा रिपीट न हो।जिस शक्ति का जिस समय आह्वान करो वो शक्ति उसी समय प्रैक्टिकल स्वरूप में अनुभव हो। आर्डर किया और हाज़िर इसे कहते हैं सिद्धि स्वरूप।

उत्तर -6 E - स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन होगा। इस तरह यदि ज्ञान मार्ग में चलने के बाद स्वयं में अपेक्षित परिवर्तन नहीं कर सकते तो दूसरों को बदलने की आश नहीं करनी चाहिए।समझाने से नही अपितु सदाचार को स्वयं व्यवहार में लाने से ही दूसरों पर प्रभाव पडता है।हां दूसरों को समझाने का प्रभाव स्वपरिवर्तन/

स्वयं में बदलाव के बाद अवश्य पडेंगा।इसलिए A और B दोनों सही हैं।

---

*उत्तर 7-D देह अभिमान और व्यर्थ।

विघ्नों की संख्या अगणित है, भय, संशय, आत्मविश्वास,आपदा,प्रतिकूल परिस्थितियां जिन पर हमारा नियंत्रण नहीं होती है। बड़े विघ्न पांच विकार हैं। बाबा कहते देह-अभिमान के कारण ही बच्चों से बहुत भूलें होती हैं। वह सर्विस भी नहीं कर सकते हैं।दूसरा, कोई भी संकल्प, बोल वा कर्म व्यर्थ नहीं जायें। किन्तु व्यर्थ के सम्बन्ध में अव्यक्त महावाक्य है-

विघ्न आना आवश्यक है और जितना विघ्न आना उतने शक्तिशाली बनो।विघ्नों को देख विघ्न-विनाशक बनने के बजाय, विघ्नों को देख अपनी स्टेज से नीचे तो नहीं आ जाते हो? क्या अनेक प्रकार के आये हुए तूफान आपकी बुद्धि में तूफान तो पैदा नहीं करते हैं?

---

*उत्तर 8-B खुशी का खजाना।

मुरली महावाक्यानुसार-चाहे आत्माओं में ज्ञान के प्रति, योग ... संगमयुग पर बापदादा ने सबसे बड़ा खजाना खुशी का दिया है। खुशी के लिए कहा जाता है - खुशी जैसी कोई खुराक नहीं, खुशी जैसा कोई खजाना नहीं। ..सबसे बड़े से बड़ा खज़ाना है खुशी का खज़ाना। इसी खुशी के लिए लोग तड़फते हैं। और आप सब सदा खुशी में नाचने वाले हो। आप सबके यादगार चित्र में भी खुशी का पोज़ दिखाया हुआ है - अपना चित्र याद है।अन्य खजाने ज्ञान से ज्ञान, शक्ति से अष्टशक्ति सम्पन्न और स्नेह से सर्व प्रति मधुर सम्पन्न बनेंगे।